सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• किरण मोर

सृजक-सृजन-समीक्षा

श्रीमति किरण अमरनाथ मोर

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

किरण अमरनाथ मोर का परिचय

नाम - श्रीमति किरण अमरनाथ मोर

पिता-श्री रघुनंदन प्रसाद नौगरैया

माता-श्रीमति-रामबाई नौगरैया

जन्मतिथि-25-11-1963

स्थान-जबलपुर

संबद्धता

म.प्र.हिन्दी लेखिका संघ कटनी

सुदर्शना लेडीज क्लब, कटनी

सदस्य

श्री गहोई महिला समिति ,पदाधिकारी,प्रचारक

शिक्षा-बी.ए.

लेखन-कविता,तुकांत,अतुकांत,लेख,लघुकथा, मुक्तक, संस्मरण,गीत विधा।

प्रकाशन-जे.एम.डी.पब्लिकेशन दिल्ली से

श्रेष्ठ काव्य संगम में

शुभप्रभात पत्रिका सागर से

राष्ट्रीय कवियित्रि संगम ,भोपाल में

शब्द शक्ति सम्मान।

लोकजंग भोपाल और दैनिक मध्य प्रदेश में ,गहोई संस्कार पत्रिका में कविता प्रकाशित।

आत्मकथ्य

कक्षा छटवीं में भाई के घर छोड़कर जाने पर मुंब ई में उनको पत्र लिखा था, पहली बार जिसमें बिना ग्यान के साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया था,भाई ने ही वापिस आकर बताया, कि पत्र के सृजन की भाषा इतनी सुघड़ और सटीक है कि भाई उसे पढ़कर घर वापस आ गया, अतः बहुत ही प्रशंसा मिली,,, तब अपनी लेखन क्षमता का ग्यान हुआ।

उसके बाद पढ़ाई के दौरान ही, भाई के बच्चों के लिए कभी किसी विषय पर निबंध लिखा तो कभी पत्र और इस तरह लेखनी चल पड़ी। एक बार स्वयं के लिए आठवीं कक्षा में अपने जीवन की अविस्मरणीय घटना पर एक निबंध लिखा जिसमें विशिष्टता प्राप्त कर प्रशंसा की पात्र बनी,तब से लेखन के प्रति रुझान बढ़ता गया और यदा कदा विषय पर लिखने लगी। नवभारत पेपर में चित्र देखकर कहानी लिखो प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं पुरस्कार मिला।परन्तु शादी होने के पश्चात किसी का प्रोत्साहन न मिलने के कारण लेखनी को विराम दे दिया---पर कहीं शायद बीज पड़ा था अंदर जिसकी कोपलें फूटने को आतुर थीं अतः बच्चों के पालन पोषण, शिक्षि दीक्षा के लिए बच्चों के घर से प्रस्थान के उपरांत अकेला पन और संयुक्त परिवार की प्रतिकूल परिस्थितियों ने फिर से हाथ में कलम पकड़ा दी और तब से अनवरत जारी है।

उसके बाद भारत में नारियों की मनोदशा देख मन कलुषित हो गया और लेखन के माध्यम से उनकी दशा व दिशा पन्नों पर बिखरने लगी।

अब अंतरा में जुड़ने से सक्रियता में गति मिली।

बहुत बहुत धन्यवाद अंतरा ।

किरण अमरनाथ मोर

सहारा

जीवन आगे बढ़ता क्यूँ,भाग्य गर साथ हमारा न होता,
आगे बढ़ने की खातिर, बीते पलों को बिसारा न होता।

साहस अगम भरा था हममें, मंजिल को पाने का,
मिलती क्या अगर ईश्वर का इशारा न होता।

सुख दुख धूप-छांव बन, आते जाते रहते हैं,
संघर्ष बिना जीवन का कभी भी गुजारा न होता।

मझधार की धार बीच फंसे ही रह जाते,
तैरकर पार जाने के लिए जो किनारा न होता।

जीवन की भूल भुलैंया में भटकते रह जाते,
नेकी जो की थी कभी,उसका जो सहारा न होता।

मरना सत्य है, कहीं जो ये मिथ्या होता,
जीवन हमें हमारा तो न इतना प्यारा होता।

रिश्तों की अहमियत को समझ गये हो गर तुम,
जग से मुक्ति न पाते, चार कंधों का सहारा न होता।

पहरा

मेरा तेरे लिए प्यार सागर जितना गहरा है,
फिर भी डर का सख्त क्यूँ इतना पहरा है।

बुलाया था तूने किया यूं इशारा मुझको,
हवा में सरसराता दुपट्टा तेरा लहरा है।

खड़ी थी खिड़की पर, राह तकती थी शायद
तभी दीखा था मुझे,तेरा चाँद सा चेहरा है

तेरे पास आने को,ज्यूं ही मुड़ा था मैं
जहां ने रोक मुझपे डाला जंजीर का सेहरा है

मिल न सकें शायद, अब हम इस जनम में,
जमाना नहीं सुनेगा,ये कानों से बहरा है।

आओ समा जाएं,मौत की आगोश में हम तुम,
अगला जनम हमारा शायद फिर हो जाए सुनहरा है।

प्रेम पिपासा

हर वक्त यहां अकेली हूं
हर रिश्ते में भी घिरी हूँ मैं
पर उनकी प्रेम पिपासा में
स्वार्थ चक्र में पिरी हूँ मैं

जानती हूँ ठोकर खाऊंगी इनसे
इनके स्वार्थ जो पूरे होंगे
नियति भी अपनी पहचानती हूँ
सबकी आँखों की किरकिरी हूँ मैं।

रहूँ इस उम्मीद में हरदम
पहिये का तो सिरा अपना भी है
मेरा भी दामन थाम कहे कोई
सबके जीवन चक्र की धुरी हूँ मैं।

उम्मीद "किरण" नैनों में चमक हीजाती है
बहती ही गई हूँ नदिया सी
सबके सपनों की पोटली को थामे
अपनी ही पलकों से लेकिन
अश्कों की शक्ल झिरी हूँ मैं।

सोच सकूं कि कुछ वजूद है मेरा
पर वक्त पहिया थमता ही नहीं
बढ़ता ही जाये आगे आगे
इसकी हर चाल गिरी हूँ मैं।

संवरती जिन्दगी

अपने ही ख्वाबों में कभी घुटती है जिन्दगी
अपने ही स्वाभिमान से छली है लुटती जिन्दगी
रिश्तों के छलावे से है सिमटती सी जिन्दगी
स्वार्थ की आग में है जलती बुझती जिन्दगी

कभी तो कहीं गर्त पड़ी सिसकती है जिन्दगी
बागों में कहीं खुशबू बन फूलों सी महकती है जिन्दगी
अपनी ही किस्मत से कभी बिगड़ती है जिन्दगी
तो अपने ही कर्मों से से भी संवरती है जिन्दगी।

साक्ष्य प्रेम

मैंने तुम्हें
मूरत की तरह
अपने दिल में बिठाया
पर
तुम्हें मेरे
प्रेम का साक्ष्य
चाहिये था

क्या
करती
तुम्हें विश्वास
ही नहीं था
मेरे प्रेम पर
इसलिए ये
कदम उठाया सिर्फ
तुम्हारे लिए।

तुम चाहते तो
विश्वास कर सकते थे
पर तुम्हारीआँखों
पर किसी के
अंधविश्वास की
पट्‌टी चढ़ी हुई थी
जो तुम्हें मेरे खिलाफ
भड़काती थी।

तुम स्वयं के विवेक से
तो कार्य करते
किसी के बहकावे में
अपनी ही जानसे
प्रमाण की आवश्यकता
पड़ी तुम्हें।

और मेरे लिए
तुम्हारा दिल जीतना
आवश्यक हो गया था
अतः तुमसे दूर
जाना पड़ा
न चाहते हुए भी।

लेकिन
साक्ष्य दिया
मैंने तुमसे अपने
अटूट प्रेम का।

उधार की जिन्दगी

उधार की जिन्दगी जी रहे
हम सभी फिर भी,..

इतना अभिमान है क्यूं।
इसका कर्ज चुकाकर ही
जा पायेंगे जहां से
माने इसे आसान क्यूं है।

नेकी और बदी करना ही
इस कर्ज का मोल है
जानकर भी तू बना हुआ
इतना नादान क्यूं है।
तिनका तिनका न चुकेगा
तब तक जग में
आता ही रहेगा बार बार
सम्मान मां बाप को
दिला सके न जो
ऐसी स्वार्थ परक
होती ही संतान है क्यूं।

जिन्दगी उधार देकर भेजा ईश ने
मानवता और परोपकार
ही ब्याज है और
सत्कर्म मूल है इसका
भूल जाता ये इंसान है क्यूं।

मगरूर

हम स्वयं में इतने आज
क्यूं मगरूर हो गए
अपनों से इसी तारतम्य
में ही दूर हो गए।

इंसानियत कुछ दिखती थी जो
कहीं लुप्त होती जा रही
स्वार्थ की राह पर चलने
अब तो बादस्तूर हो गए।

काम पड़ते ही किसी को
अपनापन प्रेम यूं दिखाते हैं
हम सिर्फ उसी के हैं
भरोसा इतना जताते हैं।

काम निकल जाऐ जो
शायद हम पहचानते हैं आपको
कन्नी काट नजरें चुराकर
किनारे से निकल जाते हैं।

सच्चाई खामोश है आज
दुनिया फरेबी बन रही
मन में जो कटुता है पाले
उसी से ही ज्यादा छन रही

सीधा सादा जो यहां
कमजोर कहते हैं सभी
अपनी अपनी मगरूरियत में
भाई भाई में ठन रही।

क्यों नहीं अपनों के दर्द में
आँसूं निकलते अब हमारेहैं
औपरिचारिकता निभाने खड़े
कहते क्यूं उनको हैं बेचारे।

आयेगा वो क्या वापस फिर
वो जो सतयुग होता था कभी
या यूं ही रहेंगे हम हमेशा
तलवार के जैसै दोधारे।

सृजन की समीक्षा

1.

सृजक सृजन समीक्षा विशेषांक में स्वागत है आपका आ किरण मोर जी परिचय, प्रकाशन, पुरस्कार, सम्मान, विधा ज्ञान, आत्मकथ्य बहुत ही सुन्दर और सहज है। बचपन से ही लेखन के प्रति रुझान किन्तु परिस्थितियों के अनुरूप कलम का छूटना और फिर पकड़ना, भारतीय महिलाओं की आपबीती सा लगता है। अन्तरा शब्द शक्ति से आपको मनोबल प्राप्त होता है जानकर प्रसन्नता हुई।
ग़ज़ल, संघर्षमय जीवन, सुख दुःख का आना जाना, रिश्तों का निभाना प्रायः कुछ इसी प्रकार सभी का जीवन निकलता जाता है। **पहरा**, अधूरा प्रेम और उसकी वेदना बेहतरीन अभिव्यक्ति की है आपने।। **प्रेम पिपासा**, रिश्ते निभाते हुए कई तरह के कठोर और अनजान परिस्थिति का सामना करते हुए लाजवाब सृजन। **संवरती जिन्दगी**, किस्मत और कर्म से बनती बिगड़ती जिन्दगी , बेहतरीन अभिव्यक्ति। **साक्ष्य प्रेम**, खूबसूरत प्रेमाभिव्यक्ति। **उधार की जिन्दगी**, दार्शनिक अभिव्यक्ति, ∗**मगरूर**∗, स्वार्थ और लालच में छले जा रहे रिश्ते , टूटते हुए भरोसे, बहुत खूब किरण जी। आपकी सारी रचनाएँ इन्सानी मन में हो रही हलचल को बहुत बढ़िया तरीके से चित्रित कर रही हैं। अभी बहुत कुछ बाकी है , ऐसा लगता है। **अशेष शुभकामनाएँ**।

पिंकी परुथी "अनामिका"

2.

केंद्रीय रचनाकार के रूप में किरण मोर जी का अंतरा के पटल पर स्वागत, **अभिनंदन**।

अंतरा मंच **बधाई** का पात्र है जिसके द्वारा प्रतिभावान रचनाकारों का परिचय और उनकी रचनाओं से परिचित होने और उन्हें पढ़ने का अवसर मिलता है।

जान कर अच्छा लगा कि आप भी मीरा भार्गव की संस्था सुदर्शना लेडीज चलन की सदस्य और श्री गहोई महिला समिति में पदाधिकारी भी हैं। जाहिर है व्यस्तता के बीच अपनी सेवा की गतिविधियों और सृजन के बीच सुंदर सामंजस्य बना रखा है।

सृजन का बीज आपके अंदर था। सही स्थितियों और पोषण मिलने पर प्रस्फुटित होकर विकसित हुआ। भाई का घर से जाना, आपका पत्र पाकर लौट आना आपके सृजन को भीतर से बाहर लाने का कारण बना और अपनी योग्यता से, श्रम से उसे विकसित किया।

पहली ग़ज़ल संघर्ष के बिना जीवन सम्भव नहीं का सार्थक संदेश देती है टी पहरा में... बिछड़ने का डर है। अपने वजूद की तलाश प्रेम पिपासा में है तो कर्म से ही जिंदगी सँवरती है का अर्थपूर्ण संदेश सँवरती जिंदगी में है।प्रेम जहाँ है वहाँ साक्ष्य की आवश्यकता नहीं... इस भाव की अभिव्यक्ति साक्ष्य प्रेम में है।

अभिमान छोड़कर सत्कर्म ही मूल है जीवन का.... इसका प्रतिपादन उधर की जिंदगी.. रचना करती है तो मगरूर.... आज की स्वार्थी मनोवृत्ति के दर्शन करती है जहाँ काम निकल जाने पर न पहचानने की प्रवृत्ति है। भाव पक्ष सशक्त है। कला पक्ष की दृष्टि से रचनायें कसावट माँगती हैं। अभ्यास से यह भी संभव होगा। सृजन जारी रहना चाहिए बस।

शुभकामनाएँ।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

3.

आदरणीय किरण मोर जी,

पटल पर केन्द्रीय रचनाकार के तौर पर आपका स्वागत, **अभिनंदन** है| पत्र लेखन से प्रारंभ हुई साहित्यिक यात्रा जिसके कारण भाई लौट आया हो, यह बहुत सुन्दर लेखन का परिणाम है|

सशक्त लेखन, सधा हुई भाषा और भावों पर नियंत्रण आपके लेखन की पहचान हैं |

आपकी रचनाओं में सरल भाषा, सत्य घटना और रोचकता बरकरार रहती हैं| कही-कही पर पर द्विअर्थी संवाद भी है, पर वो नवीनताबोधक है|श्रृंगार रस का बाहुल्य है|

इसी तरह आप नित नुतन अध्याय बुनती रहें, यही कामना हैं|

डा० अर्पण जैन 'अविचल'

4.

आज की उत्सव मूर्ति श्रीमती किरण मोर जी को पटल पर पाकरअच्छा लगा ।

किरण जी का वन्दन, हार्दिक अभिनन्दन और स्वागत है ।

आपका जीवन परिचय, संस्थाओं से संबद्धता, प्रकाशन और सम्मान सहज ही आपको भीड़ से अलग करते हैं ।

आपका सम्पूर्ण आत्मकथ्य, आपके सहज और सरल व्यक्तित्व की पहचान है ।

बचपन में लेखनी का बीज आज अंकुरित होकर विशाल वृक्ष बन गया , इसका पालन पोषण करती रहें ।

आपकी रचनाओं से हर रोज़ ही गुज़रना होता है और उनकी कशिश देर तक बनी रहती है ।

ग़ज़ल:-संपूर्ण जीवन दर्शन करा रही है, भाग्य, ईश्वर हमें आगे बढ़ा कर, ठौर तक पहुँचाता तो है ,मग़र कर्म के बिना नही....

पहरा:-असफल प्रेम कहानी का दुःखद आख्यान है,
अंत फिर से मिलने की ख़्वाहिश .....

प्रेम पिपासा:- बहुत मार्मिकता से किया गया चित्रण है , नारी की संवेदनाओं को अंदर तक महसूस किये बिना, उसकी नियति को परिभाषित करना बेहद दुष्कर है ।।

संवरती जिंदगी:-जिन्दगी के भिन्न-भिन्न रूपों पर दृष्टि पात करती ,और कर्म की प्रधानता को तरज़ीह देती,
बहती नदिया और अश्क़ों की रचना है ।

साक्ष्य प्रेम:- समर्पण कीसुन्दर भावाभिव्यक्ति है,प्रेम साक्ष्य माँगे तो कदाचित प्रेम नही है ।।
मग़र दूरियों से, निहित प्रेम उभर ही आता है।

उधार की जिंदगी:-
नेकी-बदी, आना जाना ,मानवीय मूल्यों के अधोगति के कारण उपजे विषाद का सुंदर चित्रण किया है मानवता, परोपकार, सत्कर्म करने के प्रेरित करता हुआ अंत प्रशंसनीय है,.

मगरूर:- एक सशक्त अभिव्यक्ति ,
अपनों से अपनों का मुँह देखा व्यवहार आहत तो करता ही है ।
भाव गहनता और शब्दों के शुद्ध प्रयोग की ओर थोड़ा ध्यान दें ।
अर्पण जी और आ भाई सत्यप्रसन्न जी की बात का संज्ञान लें ।

आपकी साहित्यक यात्रा के लिए मंगलकामनाएं ।

जय हो,विजय हो।

ब्रजेश शर्मा विफल, झाँसी

5.

आदरणीया किरण जी

सादर नमन

आप को अनंत बधाइयाँ कि आप का चयन केंद्रीय रचनाकार के रूप में हुआ,,**आप का आत्म कथ्य पढ़ा,रोचक है,,लेखन सही मायने में इच्छा शक्ति पर निर्भर है,,और आप की जीवनी बताती है कि आप की ये रुचि बचपन से ही प्रगाढ़ थी।**

आप की दोनों ग़ज़ल अच्छी है और इस कि खूबसूरती तब और बढ़ जाती है जब वो हिंदी के शब्दों में पिरोई गयी हो।

प्रेम पिपासा,,व्वाह व्वाह लाजवाब अनूठी रचना है

संवरती जिंदगी,,व्वाह व्वाह,,लेकिन इसको थोड़ा सा और व्यवस्थित किया जा सकता था

साक्ष्य प्रेम,,खूबसूरत नज़्म,,

उधार की जिंदगी,,व्वाह व्वाह सब से उत्कृष्ट रचना,,और आखरी बंध तो बहुत ही लाजवाब है,,,**बधाई**

मगरूर,,व्वाह सही मायनें में इंसानी असलियत को दर्शाती रचना है,,अच्छी रचना हुई।

पुनः आप को बहुत बधाइयाँ और आप के उज्ज्वल साहित्यक भविष्य की कामना के साथ,,

शीतल खंडेलवाल

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com